सुशिक्षित गाँव

- धर्म तंत्र से लोक शिक्षण का प्रबंध।
- रात्रिकालीन, प्रौढ़ शाला, बाल संस्कार शाला। कामकाजी विद्यालय, एकल विद्यालय का संचालन व्यवहारिक ज्ञान का प्रशिक्षण।
- गाँव विकास की विविध धाराओं की अद्यतन जानकारी।
- स्कूली बच्चों हेतु निःशुल्क कोचिंग।
- भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा आयोजन।
- कन्या शिक्षा तथा 100% शिक्षा हेतु प्रयास।

स्वावलम्बी गाँव -

- गौ आधारित कृषि, ऊर्जा, स्वास्थ्य तंत्र का विकास।
- लघु-कुटीर उद्योगों से दैनिक जरूरत की वस्तुओं का उत्पादन।
- कच्चे माल का निर्यात न हो, पक्का/प्रोसेस होकर बाहर बिकने जाय।
- गाँव के श्रम का उपयोग गाँव में ही सुनिश्चित करें।
- समय दान एवं मुठ्ठी फण्ड का ग्राम विकास हेतु नियोजन।
- शिक्षा, तकनीकी, नमक के अतिरिक्त आवश्यक सेवा / वस्तुओं का उत्पादन गाँव में हो।
- ऋषि-कृषि से खेती को स्वावलम्बी बनायें। खाद, ऊर्जा, तकनीकी, कीट-बीमारी, नियंत्रण जैविक हो।

सहयोग - सहकार से भरा - पूरा गाँव

- सामूहिक - श्रमदान का प्रचलन।
- आपसी मतभेद-मुकदमें ग्राम सभा स्तर पर हल करें।
- जाति, लिंग, वर्ग, अर्थ भेद को कम करना।
- पर्व-त्यौहारों का सामूहिक आयोजन।
- रास्ते, सड़के, कुंए, पाठशाला, मंदिर, पार्क, तालाब का सामूहिक श्रमदान से निर्माण/ जीर्णोद्धार / प्रबंधन।
- फावड़ा वाहिनी, सुरक्षा वाहिनी का निर्माण।

ग्रामतीर्थ योजना के कार्यक्रमों से संबंधित पुस्तकें

- ग्रामोत्थान की ओर
- राष्ट्र के अर्थतंत्र का मेरूदण्ड गौशाला
- गोपालन व गौशाला प्रबंधन
- आर्थिक स्वावलंबन-भाग-1
- आर्थिक स्वावलंबन-भाग-2
- आर्थिक स्वावलंबन-भाग-3
- केंचुआ खाद संदर्शिका
- जडी-बूटी की व्यावसायिक खेती
- गंदगी से घृणित असभ्यता
- वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य

सम्पर्क सूत्र :
कार्यालय, युवा जागृति अभियान
एवं सप्त आंदोलन,
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
फोन नं. 09258360652, 09258369676
(1334) 260602 (एक्स.436)
Email : youthcell@awgp.org
Web : www.awgp.org • diya.net.in

www.awgp.org

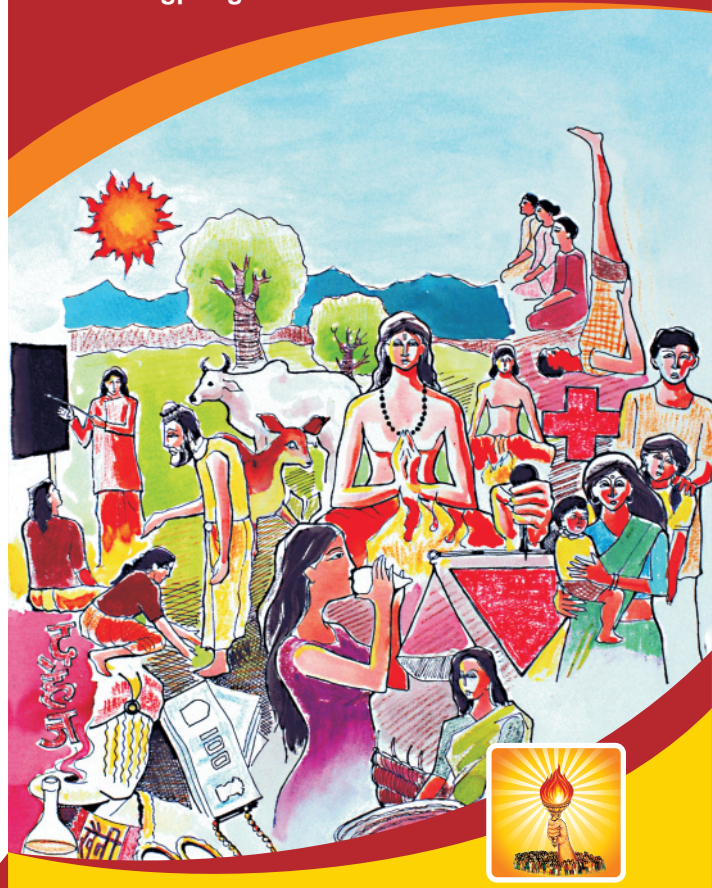

अखिल विश्व गायत्री परिवार

युग ऋषि की ग्राम तीर्थ योजना

गाँव की गोद में

SMART VILLAGE

• संस्कार युक्त • व्यसन कुरीति मुक्त
• स्वच्छ • स्वस्थ • सुशिक्षित • स्वावलम्बी
• सहयोग-सहकार से भरापूरा गाँव

फिर अपने गाँवों को हम स्वर्ग बनायेंगे,
अपने अंदर सोया हुआ देवत्व जगायेंगे

आज भी भारत गाँवों में रहता है। व्यक्ति से घर, घर से गाँव और गाँव से भारत का निर्माण संभव है । वैश्विक बाजारवाद के फ ल स्वरूप व्यवसायिक संगठनों की घुसपैठ एवं ओछी राजनीति के कुचक्र ने गाँवों की सहयोग-सहकार युक्त संस्कृति को तहस-नहस कर दिया है। परिणाम में गंदगी, अशिक्षा, परावलम्बन, अस्वस्थता, विखराव एवं पलायन की समस्या मुँह बाये खडी है। गाँव दुबले हो रहे हैं और शहरों का मोटापा बढ़ रहा है।

समाधान है युगऋषि की ग्राम तीर्थ योजना

ग्रामोत्थान के मूलभूत आधार

- विकास का मूल आधार परिष्कृत व्यक्तित्व (श्रेष्ठ व्यक्तित्व ढालने की विधा)
- समयदान, अंशदान (मुट्ठीफंड) का प्रचलन एवं बगैर सरकारी आर्थिक सहायता के जनस्तर पर विकास का सामाजिक तंत्र
- ऋषि सूत्रों पर आधारित विकास
- भारत की आवश्यकता व जमीनी हकीकत के अनुरूप प्राचीन और आधुनिक तकनीकी और साधनो का उपयोग व योजनाएँ हों
- सहकारिता व सामुहिकता विकास प्रक्रिया के प्रमुख अंग
- समग्र एवं टिकाउ विकास (व्यक्ति, प्रकृति एवं समाज का समन्वित-संतुलित विकास) की अवधारणा एवं पहल
- सामुदायिक कार्यों के लिए सामूहिक श्रमदान का प्रचलन
- परिष्कृत ''धर्मतंत्र से लोकशिक्षण'' कार्य प्रणाली का प्रमुख अंग

संस्कार युक्त गाँव

- धर्मतंत्र से लोक शिक्षण का विकास।
- पर्व-त्यौहारों का प्रगति शील ढंग से सामूहिक आयोजन।
- देवालयों का प्रबंधन एवं जनजागरण केन्द्र के रूप में विकास।
- संस्कार परम्परा का प्रचलन।
- दीवार लेखन एवं चौपाल स्वाध्याय।

व्यसन-कुरीति मुक्त गाँव

- नशा मुक्ति प्रदर्शनी, गोष्ठी आयोजन। व्यसन से बचाकर सृजन में लगाने की प्रेरणा।
- नशा मुक्ति उपचार एवं परामर्श केन्द्र।
- सार्वजनिक स्थलों पर नशीली वस्तु विक्रय एवं प्रयोग पर पूर्णतः प्रतिबंध।
- नशा मुक्त विद्यालय, पंचायत निर्माण।
- टोना-टोटका, झाड-फूंख, ताबीज से मुक्ति।
- आदर्श सामूहिक आदर्श विवाहों का प्रचलन।
- मृतक भोज पर रोक।

स्वस्थ गाँव

- श्रम के प्रति सम्मान का भाव विकसित करना।
- योग-व्यायाम-प्राणायाम-ध्यान केन्द्र संचालन।
- गौ द्रव्य-दूध, दही, मठा, घी, गोमूत्र, पंचगव्य के प्रयोग को बढ़ावा।
- अंकुरित अन्न, शाकाहार, मौसमी, स्थानीय फ ल, जवारा रस का प्रयोग।
- वनौषधि, एक्यूप्रेशर, प्राकृतिक चिकित्सा का प्रबंध करना।

स्वच्छ - निर्मल- सुवासित गाँव

- निस्तार जल निकास का उचित प्रबंध-नाली, सोकपिट, निर्माण।
- पॉलीथीन, प्लास्टिक, डिस्पोजल दोने पत्तल पर प्रतिबंध एवं उपयोग की स्थिति में उचित निबटान।
- कपडे के थैले, पत्ते/कागज के दोना-पत्तल का उपयोग।
- खुले में शौच पर रोक। कूड़ेदान का प्रयोग।
- गोबर, गोमूत्र, मल-मूत्र का बायोगैस / खाद में उपयोग।
- सामूहिक श्रमदान की अनिवार्यता और नियमित प्रयोग।
- वृक्षा रोपण पर विशेष ध्यान, 'Clean & Green' ग्राम ।